रघूणामन्वयं वक्ष्ये तनुवाग्विभवोऽपि सन् ।

तद्गुणैः कर्णमागत्य चापलाय प्रचोदितः।।9।।

अन्वय तनुवाग्विभवोऽपि सन् तद्गुणैः कर्णमागत्य चापलाय प्रचोदितः (अहम्) रघुणाम् अन्वयं वक्ष्ये।

अनुवाद यद्यपि मेरी वाणी का वैभव (वर्णनशक्ति) कम है तथापि (पूर्वोक्त गुणों से युक्त) रघुवंशी राजाओं का वर्णन करुंगा जिनके गुणों ने मेरे कान में आकर इस चपल कार्य (रघुवंश काव्य-रचना) को करने के लिए प्रेरित किया है।

टिप्पणियां

वाग्विभवः वाचां विभवः वाग्विभवः (षष्ठी तत्पुरुष), तनुवाग्विभवः यस्य सः (बहुव्रीहि) तुनवाग्विभवः। यद्यपि मेरी वाणी का (रघुकुल के वर्णन का) वैभव (सामर्थ्य) थोड़ा है, अर्थात् सूर्यकुल का वर्णन करने का सामर्थ्य कम होने पर भी। शब्दार्थ-ज्ञान-सामर्थ्य अल्प होने पर भी।

अन्वयम् कुल को, वंश को।

कर्णमागत्य मेरे कानों में आकर, कानों में पड़ने पर। भाव यह है कि रघुवंशियों के गुणों को अनवरत सुनते रहने के कारण ही महाकवि कालिदास उनके वंश के वर्णन की ओर आकृष्ट हुए हैं।

चापलाय- चपल-अण्। यहां **''क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः''** सूत्र से चतुर्थी का प्रयोग हुआ है: अर्थ है चंचल, उपहसनीय काम के लिए। भाव यह है जब मैं एक ओर सूर्यवंश की महत्ता को तथा दूसरी ओर अपनी वाणी की दुर्बलता को देखता हूं तो मुझे दोनों में बड़ा अन्तर दिखाई देता है। यह जानते हुए भी मैं रघुकाव्य की रचना में

इसलिए उत्सुक हूं कि सूर्यवंशी प्रतापी राजाओं के गुण सुन लेने के बाद (मैं उनसे उतना प्रभावित हो गया हूं कि) अब मुझसे उनकी प्रशंसा में कुछ कहे बिना नहीं रहा जा सकता। उनके गुणों के आख्यान में मेरे मुख से निकले उद्‌गार भले ही तुच्छ क्यों न हो और लोग इसे मूर्खता का काम कहकर इस पर भले ही हंसे, परन्तु मैं कुछ कहे बिना चुप नहीं रह सकता।

विशेष– इस सन्दर्भ में यह बात ध्यान देने योग्य है कि महाकवि कालिदास ने इन श्लोकों में एक आदर्श राजा का रूप हमारे सामने उपस्थित किया है। यही आदर्श आने वाले 13–30 के श्लोकों में और अधिक स्पष्ट हुआ है।

प्रचोदितः प्र उपसर्ग, धातु चुद्, णिच् और क्त प्रत्यय। उद्यत कर दिया गया। मचल उठा।